शिव अवतरण बनाम गीता जयंती

शिव जयंती शब्द सुनकर सभी सोचेंगे कि शिव भी कोई मनुष्य है क्योंकि प्राय: शंकर को ही शिव मान लिया गया है। यहाँ पर जिस शिव की चर्चा हम कर रहे हैं वह न तो कोई मनुष्य हैं और न ही महादेव शंकर बल्कि वह तो सर्व आत्माओं के परमपिता निराकार त्रिमूर्ति शिव है। जो ब्रह्मा-विष्णु-शंकर त्रिदेव के भी रचयिता हैं। जिसकी यादगार में ओम के चिन्ह के ऊपर बिन्दु लगाया जाता है क्योंकि वह बिन्दु स्वरूप, ज्योति स्वरूप है, स्वयं प्रकाशमान है। उन्हें ही सृष्टि का बीज रूप सत् चित्त आनंद स्वरूप कहा जाता है।

शिव-जयंती क्यों?

भगवान शिव देह रहित व अजन्मा है फिर उनकी जयंती क्यों? क्योंकि जन्म तो प्राय: गर्भ से ही होता है। फिर अजन्मा का जन्म कैसे? यही अति गुह्य व जानने योग्य रहस्य है। श्रीमद भगवद् गीता के चौथे अध्याय के श्लोक 6 व 9 वें पर ध्यान दें। कहा गया है कि मैं प्रकृति को अधीन करके प्रकट होता हूँ। मेरा जन्म व कर्म दिव्य और अलौकिक है।

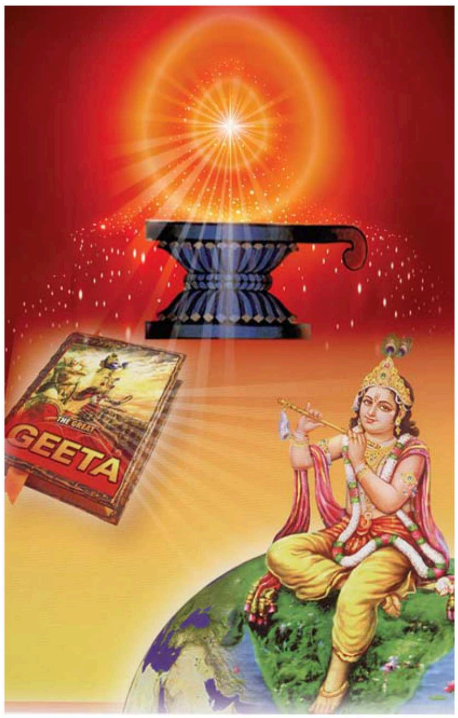

इसका सहज व स्पष्ट अर्थ है कि भगवान गर्भ से जन्म नहीं लेते। वे तो परकाया प्रवेश करते हैं। शास्त्रों में ही ये बात भी है कि भगवान ने ब्रह्मा द्वारा वेदों का ज्ञान दिया, इसलिए ब्रह्मा के हाथ में वेद दिखाये हैं। तो निराकार परमात्मा का नाम ही शिव है क्योंकि वे कल्याणकारी हैं। वे ही ब्रह्मा तन में प्रवेश करके सत्य ज्ञान देते हैं। उनके इस दिव्य जन्म को ही शिव जयंती के रूप में मनाया जाता है।

शिव ही ज्ञानदाता है

आज विश्व में वेद भी है, दर्शन व पुराण व अन्य ग्रन्थ भी है फिर भी इस सत्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि चहुँ ओर अज्ञान का अंधकार छाया हुआ है। समस्त ग्रन्थों का अध्ययन करके भी मनुष्य की ज्ञान-पिपासा शान्त नहीं होती। इसका अर्थ है कि वेदों शास्त्रों के अतिरिक्त भी कुछ ज्ञान है। स्वयं भगवान ने कहा है कि यदि शास्त्रों में ज्ञान रत्न होते तो भारत साहूकार होता। यदि शास्त्रों में ही सम्पूर्ण ज्ञान होता तो भगवान को ज्ञान सागर व ज्ञान दाता क्यों कहते? यह मानना ही पड़ेगा कि शास्त्रों में भक्ति का ज्ञान है। वेदों व दर्शनों की व्याख्या भी अनेक हुई है, इससे भी ज्ञान के क्षेत्र में भ्रम पैदा हो गये हैं।

शिव को सत्यम शिवम सुंदरम कहा गया है। क्योंकि वही सत्य ज्ञान के अधिष्ठाता है। उसी ज्ञान से जग का कल्याण होता है और मनुष्य जीवन सुंदर (देव तुल्य) बनता है। जो ज्ञान कल्याण न करे, जो ज्ञान मनुष्य को पावन न बनाये, उसे सत्य कैसे माना जा सकता है।

शिव सृष्टि के बीज रूप होने के कारण, इसके आदि-मध्य-अंत को जानने वाले हैं। वे ही ज्ञान सागर है। उन्हें ही परम शिक्षक व परम सद्गुरू भी कहा जाता है। जिसके पास ज्ञान होगा, वह देगा अवश्य।

ज्ञान के सागर अब सत्य गीता ज्ञान दे रहे हैं

परमात्मा ने कल्प के आदि में, कल्प पूर्व ज्ञान दिया था। वह ज्ञान प्राय: लोप हो गया है। समय के अंतराल में, उदारता के अभाव में, साधनों की कमी से ज्ञान लोप होता ही है। जो विज्ञान का ज्ञान आज पढ़ाया जाता है वह सौ वर्ष पूर्व नहीं था और भविष्य में भी नहीं रहेगा। 'ज्ञान' का यह नियम ही है कि वह लोप होता है व पुन: उदय होता है। अब पुन: ज्ञान देने का समय है। यह कलियुग की घोर रात्रि का समय है, माया के सम्पूर्ण प्रकोप व तमोप्रधानता का काल है। अति के विस्फोट का काल है। इसके विनाश की तैयारी पूर्ण हो चुकी है। यही महाभारत काल भी है।

इसी महाभारत काल में निराकार शिव ब्रह्मा तन से पुन: ज्ञान दे रहे हैं। उस ज्ञान को पाकर करोड़ों मनुष्यों के मन का अज्ञान-अंधकार दूर हो रहा है। लाखों लोग विकारों पर जीत पा रहे हैं। अनेकों के जीवन में सुख-चैन की बंसी बज रही है। लोग गीता पढ़ रहे हैं और ब्रह्मा-वत्स ब्रह्मा-मुख से सम्मुख बैठकर गीता ज्ञान सुन रहे हैं। पढ़ने में आनंद या सम्मुख सुनने में आनंद? आप भी आइये और ज्ञान दाता के सामने बैठकर गीता ज्ञान सुनकर अपने नयनों व कानों को तृप्त कीजिए। इसे ही हम ज्ञान मुरली कहते हैं। इसे सुनकर मन अतिन्द्रिय सुख अनुभव करता है। लाखों लोग इस ज्ञान-वीणा से अपने जीवन को झंकृत कर रहे हैं। आप भी पवित्र बनकर इसका रसपान करें।

अब सच्चे जागरण का समय है

शिवरात्रि की रात्रि को भक्त जागरण करेंगे, भगवान के आगमन की राह देखेंगे परन्तु युगों से ऐसा करने पर उनकी प्यास बुझी नहीं। उन्होने भांग धतूरे का नशा भी चढ़ाया परन्तु उन्हें ज्ञात नहीं हुआ कि ये नशा यथार्थ नहीं है। ईश्वरीय नशे के बिना ईश्वर की समीपता सम्भव नहीं। वे बाह्य रूप से तो इस रात्रि में जगते रहे परन्तु उनकी चेतना सोई रही। उन्होने शिव से नाता ही नहीं जोड़ा, शिव को अपना ही नहीं बनाया तब भला वह मिलने क्यों आयेगा। अब शिव स्वयं जगाने आये हैं, शिव भक्तों जागो। जागने का अर्थ है कि अब भक्त से उनके बच्चे बन जाओ। मांगने वाले से अधिकारी बन जाओ। अंदर में अंधकार ही अंधकार है, शिव ज्ञान का प्रकाश लाये हैं, अपने अन्तर्चित्त को प्रकाशित करो।

जिसे तुम बुलाते थे, अब वह तुम्हें बुला रहा है। जिससे तुम मिलना चाहते थे, अब वह स्वयं तुमसे मिलना चाहता है। दर्शन तो छोड़ो, वह सम्पूर्ण तुम्हारा है, बस तुम उसके बन जाओ।

-ब्र.कु.सूर्य

किसे मिलते हैं शिव-भगवान!

हमें उनसे मिलने की इच्छा होती है। यह इच्छा सिद्ध करती है कि कल्प पूर्व भी उनसे हमारा मिलन हुआ था। उस मिलन में परम सुख प्राप्त हुआ था। इसलिए बार-बार उस सुख की अनुभूति हेतु मन उनसे मिलना चाहता है।

उससे मिलने का समय होता है, कलियुग का अंत। जब चारों ओर अज्ञान व विकारों का घोर अंधकार छाया होता है। तब वे आते हैं, माया पर जीत प्राप्त कराने के लिए सम्पूर्ण ज्ञान देते हैं। उसी की यादगार में मास की अंतिम काली रात्रि में यह त्यौहार मनाया जाता है। उनसे मिलना तो सब चाहते हैं। परन्तु वे स्वयं हैं परम पवित्र, पवित्रता के सागर। उनसे भला विकारों में लिप्त मनुष्य कैसे मिल सकते हैं? जिससे भी मिलना होता है तो सब जानते हैं कि समानता में ही मिलन का सुख मिलता है। जो आत्माएँ विकारों का त्याग करती है तथा परमात्मा का सत्य ज्ञान लेती है, उनसे ही शिव का मिलन होता है। वासना युक्त व्यक्ति को यदि शिव दर्शन भी दे तो उसे कुछ भी अनुभूति नहीं होगी।

मिल लो अपने परमपिता से

शिव तुम्हारा परमपिता है। पिता से मिलना अधिकार होता है। बस उसकी ओर कुछ कदम तो बढ़ाओ तो तुम्हारी जन्म-जन्म की भक्ति का फल मिल जाएगा। ऐसे लाखों मनुष्यात्माएँ प्रति वर्ष उनसे मिल रही है तथा उनसे स्वर्ग का वर्सा प्राप्त कर रही है। उठो, स्वयं को पहचानो और पहचानो उसे जिससे तुम मिलना चाहते हो। याद रहे, उसके द्वारा ही उसे जाना जा सकता है।

भारत भगवान की जन्मभूमि व कर्मभूमि है। वे यहीं आते हैं। वे यहीं आये हैं। भारत ही अध्यात्म की भूमि है, भारत ही योग व योगियों की भूमि है। यदि किसी को भगवान की खोज करनी है तो वह यहीं आता है। तो आप भी उनसे मिलने की तैयारी करो। इसके लिए शिवरात्रि पर जागरण की जरूरत नहीं, अन्तर्विवेक को जगाने की आवश्यकता है। आप उनसे पावन प्यार पाने, उनसे शक्तियां व वरदान पाने के लिए आ जाओ। याद रहे वह आपको बहुत प्यार करता है।

शिव से गीता-ज्ञान सुनने आ जाओ

ज्ञान के सागर, परमशिक्षक शिव पुन: हम सबको सत्य गीता ज्ञान दे रहे हैं और बता रहे हैं कि गीता ज्ञान श्रीकृष्ण ने नहीं दिया था। ये तो लेखकों द्वारा लिखी हुई बात थी। गीता पढ़कर भी आपने देखा होगा। अब डायरेक्ट भगवान से गीता ज्ञान सुनकर देखो। वास्तव में शिव के अवतरण के साथ ही उनके द्वारा ज्ञान देना प्रारंभ हो जाता है। अत: यह कहना ही उचित होगा कि शिव जयंती ही गीता जयंती है।

इस बार आप शिवरात्रि का त्यौहार अलौकिक ढंग से मनाएँ। शिव की पूजा करने के बजाय उनसे नाता जोड़ें। एक दिन भोजन का व्रत करने के बजाय पवित्रता का व्रत धारण करें। आपने जीवन से कोई बुराई शिव पर अर्पित कर दें। अक के फूल चढ़ाने से शिव प्रसन्न नहीं होते। जीवन की बुराइयों रूपी काँटे उन पर चढ़ा दो और सदा के लिए कोई श्रेष्ठ धारणा जीवन में अपना ले तो शिव सदा के लिए प्रसन्न हो जाएंगे।

केशोद (गुजरात)। स्वामी साधु श्वेतवैकुंठदास को सेवाकेन्द्र पर पधारने पर शिव संदेश देते हुए ब्र.कु.अजीत तथा ब्र.कु.शशिकांत।

पुणे-बोपोडी। महिला सशक्तिकरण शिविर का उद्घाटन करते हुए विधायक विनायक नितृण, डॉ. सविता एवं पूर्व महापौर दत्ता गायकवाड तथा सेवा केन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनिता।

भवानीगढ़-पंजाब। ब्र.कु. राजेन्द्र कौल को समाज की नि:स्वार्थ आध्यात्मिक सेवा करने के लिए सम्मानित करते हुए विधायक भ्राता प्रकाश गर्ग की पत्नी श्रीमति कुढणा गर्ग तथा अन्य।

भैरहवा। नेपाल के प्रधानमंत्री डा. बाबुराम भट्टराई को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शान्ति एवं ब्र.कु. निर्मला ।

ब्रह्मपुर-शांतिकुंड। मेडिकल प्रभाग के रजत जयंती कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुये ब्र.कु. माला, गोपालपुर पोर्ट लिमिटेड के चेयरमैन एम.एम. महाराणा, सचिव डॉ. के.के. पाणीग्राही, मधुमेह विशेषज्ञ डॉ. श्रीमंत शाहु, राज्य सभा सांसद रेणुबाला प्रधान, ब्र.कु. मंजु एवं टाटा स्टील जनरल मैनेजर ए.के. ओझा।

चौमूं-जयपुर। पूर्व विधायक रामलाल शर्मा शिव ध्वज दिखाकर ईश्वरीय वाणी हर गाँव-हर ढाणी अभियान का शुभारंभ करते हुए। साथ में ब्र.कु. प्रेम एवं ब्र.कु. कृष्णा तथा अन्य।